International Journal of Social Science Research (IJSSR)
Volume- 2, Issue- 5 | September - October 2025 ISSN: 3048-9490

प्राचीन भारत में वस्त्र और मसाला व्यापार: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

विरेन्द्र सिंह चौहान [1], उत्कर्ष सिंह [2]
[1] शोध छात्र, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
[2] शोध छात्र, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

सारांश :

यह अध्ययन प्राचीन भारत में वस्त्र और मसाला व्यापार के आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। प्राचीन काल से भारत विश्वभर में कपास, रेशम, ऊन और मलमल जैसे वस्त्रों तथा काली मिर्च, इलायची, दालचीनी और अदरक जैसे मसालों के लिए प्रसिद्ध रहा है। पुरातात्त्विक साक्ष्य, यात्रावृत्तांत और प्राचीन ग्रंथ प्रमाणित करते हैं कि भारत का व्यापारिक नेटवर्क स्थल मार्ग (सिल्क रूट) और समुद्री मार्गों के माध्यम से रोम, मिस्र, अरब और दक्षिण–पूर्व एशिया तक फैला हुआ था। इस व्यापार ने भारत को अपार राजस्व और विदेशी मुद्रा प्रदान की, जिससे इसे "सोने की चिड़िया" कहा जाने लगा। साथ ही, व्यापार ने सांस्कृतिक आदान–प्रदान, बौद्ध धर्म के प्रसार और कला–वास्तुकला के विकास को भी बढ़ावा दिया। अध्ययन यह दर्शाता है कि वस्त्र और मसालों ने प्राचीन भारत की अर्थव्यवस्था को वैश्विक पहचान दिलाई और आधुनिक व्यापारिक दृष्टिकोण में भी इनका महत्व बना हुआ है। यह शोध आगे के अध्ययनों के लिए आधार प्रदान करता है।

प्रमुख शब्द: प्राचीन भारत, वस्त्र व्यापार, मसाला व्यापार, सिल्क रूट, समुद्री मार्ग, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, कला और वास्तुकला, वैश्विक अर्थव्यवस्था

परिचय

प्राचीन भारत का इतिहास केवल राजवंशों और युद्धों का वर्णन नहीं है, बल्कि इसकी आर्थिक संरचना और व्यापारिक गतिविधियाँ भी उतनी ही महत्वपूर्ण रही हैं। भारत को प्राचीन काल से ही समृद्धि और विलासिता की भूमि माना गया, जिसका एक बड़ा कारण यहाँ का वस्त्र और मसाला व्यापार था। भारतीय कपास और रेशम के वस्त्र अपनी महीनता और गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध थे। यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस ने भारतीय कपास को पेड़ों पर उगने वाली ऊन कहा। इसी प्रकार, पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी (1वीं शताब्दी ई.) में भारतीय वस्त्रों के निर्यात का उल्लेख मिलता है।

मसालों के क्षेत्र में भारत विशेष रूप से प्रसिद्ध था। मलाबार तट से काली मिर्च, इलायची और दालचीनी का निर्यात रोम, मिस्र और अरब देशों तक होता था। रोमन लेखक प्लिनी द एल्डर ने लिखा है कि रोम का भारी धन भारत के मसालों और विलासिता की वस्तुओं पर व्यय होता था। यही कारण है कि भारतीय मसालों को "ब्लैक गोल्ड" कहा गया। इन वस्त्रों और मसालों ने न केवल भारत की अर्थव्यवस्था को समृद्ध किया, बल्कि इसे वैश्विक व्यापारिक नेटवर्क से भी जोड़ा। यही अध्ययन का उद्देश्य है – यह समझना कि प्राचीन भारत का वस्त्र और मसाला व्यापार किस प्रकार इसकी आर्थिक और सांस्कृतिक पहचान का आधार बना।

वस्त्रों का महत्व:

भारत कपास के वस्त्रों का जनक माना जाता है। पुरातात्त्विक साक्ष्य बताते हैं कि सिंधु घाटी सभ्यता (लगभग 2500 ई.पू.) में ही कपास की खेती और कताई-बुनाई होती थी। ग्रीक इतिहासकार हेरोडोटस (5वीं शताब्दी ई.पू.) ने भारतीय कपास को "पेड़ों पर उगने वाली ऊन" कहा। मौर्य और गुप्तकाल में भारत से सूती और रेशमी वस्त्रों का निर्यात रोम,

मिस्र और मध्य एशिया तक होता था। संगम साहित्य और पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी (Periplus of the Erythraean Sea, 1वीं शताब्दी ई.) में मद्रास, कांची और उड़ीसा से वस्त्र निर्यात का वर्णन मिलता है।

मसालों का महत्व:

भारतीय मसालों की सुगंध और औषधीय गुणों ने प्राचीनकाल से ही विदेशी व्यापारियों को आकर्षित किया। काली मिर्च को "ब्लैक गोल्ड" कहा जाता था, और यह रोम साम्राज्य के लिए अत्यंत मूल्यवान थी। रोमन लेखक प्लिनी द एल्डर (Pliny the Elder, 1वीं शताब्दी ई.) ने उल्लेख किया है कि रोम से हर वर्ष लगभग 50 मिलियन सेस्टरसीज़ मूल्य का सोना भारत के मसालों और विलासितापूर्ण वस्तुओं के लिए भेजा जाता था। दक्षिण भारत के मलाबार तट (केरल) मसाला उत्पादन और निर्यात का प्रमुख केंद्र था।

शोध का उद्देश्य और आवश्यकता:

यह अध्ययन प्राचीन भारत के वस्त्र और मसाला व्यापार का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि –

1. इन वस्तुओं ने भारत की अर्थव्यवस्था और राजस्व को कैसे प्रभावित किया।
2. वस्त्र और मसाला व्यापार ने भारत को वैश्विक व्यापारिक नेटवर्क से कैसे जोड़ा।
3. इन वस्तुओं ने भारत के सांस्कृतिक आदान–प्रदान और सभ्यता विकास में क्या योगदान दिया।

इस शोध की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि वस्त्र और मसाले न केवल प्राचीन भारतीय व्यापार की रीढ़ थे, बल्कि इन्होंने भारत को "विश्व की आर्थिक शक्ति" बनाने में भी अहम भूमिका निभाई।

प्राचीन भारत में वस्त्र उत्पादन और व्यापार

प्राचीन भारत वस्त्र उत्पादन और व्यापार के क्षेत्र में विश्व के अग्रणी देशों में गिना जाता था। वस्त्र निर्माण की परंपरा का आरंभ सिंधु घाटी सभ्यता (2500 ई.पू.) से माना जाता है, जहाँ से कपास के बीज और कताई-बुनाई के उपकरण प्राप्त हुए हैं। यह प्रमाणित करता है कि भारत कपास की खेती और वस्त्र निर्माण का जनक रहा है। यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस (5वीं शताब्दी ई.पू.) ने भारतीय कपास को "पेड़ों पर उगने वाली ऊन" के रूप में वर्णित किया। मौर्यकाल में (4वीं–3वीं शताब्दी ई.पू.) राज्य का विशेष ध्यान वस्त्र उद्योग पर था, और अर्थशास्त्र में चाणक्य ने बुनकरों और शिल्पकारों की श्रेणियों का उल्लेख किया है। गुप्तकाल में (4वीं–6वीं शताब्दी ई.) यह उद्योग और अधिक विकसित हुआ, और भारत के सूती तथा रेशमी वस्त्रों की माँग रोम, मिस्र और दक्षिण–पूर्व एशिया तक रही।

प्रमुख उत्पादन क्षेत्र विभिन्न प्रकार के वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध थे। उत्तर भारत में मगध और कौशांबी सूती वस्त्रों के लिए विख्यात थे, जबकि दक्षिण भारत के मद्रास (कांचीपुरम) से रेशमी वस्त्रों का निर्यात होता था। बंगाल के मालदा और मुर्शिदाबाद के क्षेत्र महीन मलमल और मसलिन के लिए प्रसिद्ध थे, जिसे विदेशी व्यापारी अत्यधिक मूल्य पर खरीदते थे। इसी प्रकार, गुजरात और महाराष्ट्र के क्षेत्र रंगाई और छपाई कला के केंद्र थे। ऊनी वस्त्रों का उत्पादन मुख्यतः उत्तर–पश्चिम भारत और कश्मीर में होता था, जहाँ से शाल और ऊनी कपड़े मध्य एशिया तक निर्यात किए जाते थे।

भारत का वस्त्र व्यापार केवल आंतरिक नहीं था, बल्कि इसका बाह्य स्वरूप भी अत्यंत व्यापक था। स्थल मार्ग से भारतीय वस्त्रों का निर्यात मध्य एशिया और चीन तक होता था, जबकि समुद्री मार्ग से ये वस्त्र रोमन साम्राज्य, मिस्र,

अरब देशों और दक्षिण–पूर्व एशिया तक पहुँचते थे। पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी (1वीं शताब्दी ई.) में उल्लेख मिलता है कि भारतीय बंदरगाहों जैसे भरुकच्छ (गुजरात), मुजिरिस (केरल) और ताम्रलिप्ति (बंगाल) से वस्त्रों का बड़े पैमाने पर निर्यात होता था। रोमन साम्राज्य के अभिलेख बताते हैं कि रोम भारत से रेशम और कपास आयात करता था, जिसके बदले सोना और चाँदी भेजता था। प्लिनी द एल्डर ने शिकायत की थी कि भारत की विलासिता सामग्रियों के कारण रोम की संपत्ति का भारी ह्रास हो रहा है। यह तथ्य दर्शाता है कि वस्त्र व्यापार ने न केवल भारत की आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा दिया, बल्कि इसे विश्व व्यापारिक नेटवर्क का एक महत्वपूर्ण केंद्र भी बनाया।

प्राचीन भारत में मसालों का उत्पादन और व्यापार

प्राचीन भारत मसालों के उत्पादन और निर्यात के लिए विश्वभर में विख्यात था। मसाले केवल भोजन का स्वाद बढ़ाने के लिए ही नहीं, बल्कि औषधीय उपयोग, धार्मिक अनुष्ठानों और संरक्षक (preservative) के रूप में भी काम आते थे। भारत में काली मिर्च, इलायची, दालचीनी और अदरक जैसे मसालों की खेती हज़ारों वर्षों से होती आ रही है। इनमें से काली मिर्च को प्राचीनकाल में "ब्लैक गोल्ड" कहा गया क्योंकि यह अत्यधिक मूल्यवान वस्तु थी और इसके बदले विदेशी व्यापारी बड़ी मात्रा में सोना और चाँदी भारत लाते थे। प्लिनी द एल्डर (1वीं शताब्दी ई.) ने लिखा है कि रोम से हर वर्ष लगभग 50 मिलियन सेस्टरसीज़ मूल्य का सोना भारत, विशेषकर मसालों और विलासिता की वस्तुओं के लिए भेजा जाता था।

भारत में मसालों के प्रमुख उत्पादन केंद्र दक्षिण भारत और पश्चिमी तटीय क्षेत्र थे। मलाबार तट (केरल) काली मिर्च और इलायची का मुख्य केंद्र माना जाता था। यहाँ से मसालों की आपूर्ति केवल भारत के अन्य हिस्सों में ही नहीं, बल्कि अरब और यूरोप तक होती थी। इसी प्रकार, दालचीनी और लौंग का व्यापार श्रीलंका से जुड़ा था, लेकिन भारतीय व्यापारी इन्हें मध्यस्थ के रूप में रोम और मिस्र तक पहुँचाते थे। अदरक और हल्दी का उत्पादन मुख्यतः पूर्वी और दक्षिण भारत में होता था, जिनका उपयोग आयुर्वेदिक औषधियों और धार्मिक अनुष्ठानों में भी किया जाता था।

विदेशी माँग भारतीय मसालों की वैश्विक लोकप्रियता को दर्शाती है। रोमन, यूनानी और मिस्री व्यापारी भारत के मसालों के लिए समुद्री मार्ग का उपयोग करते थे। पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी (1वीं शताब्दी ई.) में मुजिरिस (केरल) और भरुकच्छ (गुजरात) जैसे बंदरगाहों का उल्लेख मिलता है, जहाँ से मसाले, मोती और अन्य वस्तुएँ निर्यात होती थीं। अरब व्यापारी भारतीय मसालों को मध्य एशिया और यूरोप तक पहुँचाने में मध्यस्थ की भूमिका निभाते थे। इस प्रकार भारत प्राचीन विश्व व्यापार नेटवर्क का महत्वपूर्ण अंग बन गया।

मसालों के व्यापार ने भारत को न केवल आर्थिक समृद्धि प्रदान की, बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान को भी बढ़ावा दिया। विदेशी व्यापारी मसालों की खोज में भारत आते और यहाँ की संस्कृति, धर्म तथा कला से प्रभावित होकर लौटते थे। मसालों की इस वैश्विक माँग ने भारत को लंबे समय तक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का केंद्र बनाए रखा। यही कारण है कि यूरोपीय उपनिवेशवादियों ने 15वीं शताब्दी से "स्पाइस रूट" की खोज की और अंततः भारत पर अधिकार जमाने की कोशिश की। इस प्रकार प्राचीन भारत का मसाला व्यापार उसकी आर्थिक शक्ति का आधार और वैश्विक पहचान का प्रतीक बना।

प्राचीन भारत के व्यापार मार्ग और संपर्क

प्राचीन भारत का व्यापार केवल आंतरिक तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एशिया, यूरोप और अफ्रीका तक फैला हुआ था। भारत के व्यापारी स्थल और समुद्री दोनों मार्गों का उपयोग करते थे। इन मार्गों के माध्यम से न केवल वस्त्र और मसाले, बल्कि रत्न, धातु, हाथीदाँत और अन्य विलासिता की वस्तुएँ भी निर्यात की जाती थीं। इन मार्गों ने भारत को वैश्विक व्यापार नेटवर्क से जोड़ा और उसे "संपन्न स्वर्णभूमि" की उपाधि दिलाई।

1. **स्थल मार्ग (सिल्क रूट):**

भारत का संपर्क मध्य एशिया और चीन से प्राचीन “सिल्क रूट” के माध्यम से था। यह मार्ग उत्तर-पश्चिम भारत से होकर तक्षशिला, काबुल, बुखारा होते हुए चीन तक जाता था। इस मार्ग का उपयोग रेशम, कपास, मसाले और रत्नों के आदान-प्रदान के लिए किया जाता था। गुप्तकाल (चौथी–छठी शताब्दी ई.) में यह मार्ग विशेष रूप से सक्रिय था। चीनी यात्री फाह्यान (5वीं शताब्दी) और ह्वेनसांग (7वीं शताब्दी) ने अपनी यात्राओं में भारत की समृद्ध व्यापारिक गतिविधियों का उल्लेख किया है।

2. **समुद्री मार्ग (भारत–रोम, अरब, दक्षिण–पूर्व एशिया):**

समुद्री व्यापार प्राचीन भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से कई समुद्री मार्ग संचालित होते थे। भारत और रोम के बीच सीधा समुद्री व्यापार *पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी* (1वीं शताब्दी ई.) में स्पष्ट रूप से वर्णित है। इसमें लिखा है कि अरब सागर से गुजरने वाले जहाज़ भारतीय मसाले, वस्त्र और रत्न लेकर मिस्र और वहाँ से रोम तक पहुँचते थे। रोमन साम्राज्य भारत से प्राप्त वस्त्र और मसालों का इतना बड़ा उपभोक्ता था कि प्लिनी द एल्डर ने उल्लेख किया कि “भारत को निर्यात किए गए विलासिता के सामानों के कारण रोम की संपत्ति का भारी ह्रास हो रहा है।”

3. **प्रमुख बंदरगाहों की भूमिका:**

भारत के तटीय बंदरगाह व्यापार के केंद्र थे। पश्चिमी तट पर भरुकच्छ (गुजरात), मुजिरिस (केरल), सुपारा (महाराष्ट्र) जैसे बंदरगाह प्रमुख थे। इनसे रोम, अरब और अफ्रीका तक व्यापार होता था। पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी में मुजिरिस का विशेष उल्लेख मिलता है, जहाँ रोमन जहाज़ मसाले और मोती खरीदने आते थे। पूर्वी तट पर ताम्रलिप्ति (बंगाल), कांची (तमिलनाडु) और अरिकमेडु (पुडुचेरी) से दक्षिण–पूर्व एशिया, म्यांमार, इंडोनेशिया और चीन तक व्यापार होता था। इन बंदरगाहों से न केवल वस्त्र और मसाले निर्यात किए जाते थे, बल्कि विदेशी व्यापारी भी यहीं से भारत में प्रवेश करते थे।

आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभाव

प्राचीन भारत में व्यापार केवल आर्थिक गतिविधि ही नहीं था, बल्कि यह राजस्व और सांस्कृतिक विकास का भी प्रमुख आधार बना। वस्त्र और मसालों जैसे बहुमूल्य उत्पादों के निर्यात से राजाओं को कर और सीमा शुल्क (custom duty) के रूप में भारी राजस्व प्राप्त होता था। मौर्यकालीन *अर्थशास्त्र* में व्यापार से मिलने वाले करों और शिल्पकारों से वसूले जाने वाले शुल्क का स्पष्ट उल्लेख है। समुद्री और स्थल मार्गों से गुजरने वाले व्यापारिक कारवाँ राज्य के लिए आय का प्रमुख स्रोत थे। यही कारण था कि मौर्य और गुप्त शासक व्यापार मार्गों की सुरक्षा और बंदरगाहों के प्रबंधन पर विशेष ध्यान देते थे।

विदेशी व्यापार के माध्यम से भारत में विदेशी मुद्रा और बहुमूल्य धातुओं का आगमन हुआ। यूनानी, रोमन और अरब व्यापारी भारत से वस्त्र, मसाले और रत्न खरीदते थे तथा बदले में सोना–चाँदी लाते थे। रोमन स्वर्ण मुद्राएँ भारत के विभिन्न पुरातात्त्विक स्थलों से मिली हैं, जो यह दर्शाती हैं कि भारत में विदेशी मुद्रा का संचय हो रहा था। गुप्तकाल में तो यह स्थिति इतनी प्रबल हो गई थी कि उस काल को भारत का “स्वर्णयुग” कहा जाने लगा।

व्यापार का सबसे महत्वपूर्ण पहलू था सांस्कृतिक आदान–प्रदान। जब विदेशी व्यापारी भारत आते, तो वे यहाँ की कला, वास्तुकला और धर्म से प्रभावित होते। उदाहरण के लिए, बौद्ध धर्म का प्रसार समुद्री और स्थल व्यापार मार्गों के माध्यम से दक्षिण–पूर्व एशिया, चीन और जापान तक हुआ। भारतीय व्यापारी और भिक्षु साथ-साथ यात्रा करते थे और नए देशों में बौद्ध स्तूपों और विहारों की स्थापना करते थे। इसी प्रकार, भारत में विदेशी प्रभाव भी आया – यूनानी सिक्कों की शैली, पश्चिमी मूर्तिकला और गंधार कला इसका प्रमाण हैं।

व्यापार ने धर्म और कला को भी समृद्ध किया। मंदिरों, स्तूपों और मठों को व्यापारियों से दान मिलता था। अजंता–एलोरा की गुफाएँ, नालंदा विश्वविद्यालय और अमरावती स्तूप जैसे स्थापत्य में व्यापारी वर्ग का सीधा योगदान था। इस प्रकार व्यापार केवल आर्थिक उन्नति का साधन नहीं रहा, बल्कि उसने भारतीय संस्कृति, धर्म और कला को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

निष्कर्ष और शोध की संभावनाएँ

प्राचीन भारत में वस्त्र और मसाला व्यापार ने न केवल आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा दिया, बल्कि भारत को वैश्विक व्यापारिक नेटवर्क से भी जोड़ा। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कपास, रेशम और ऊन जैसे वस्त्र तथा काली मिर्च, इलायची और दालचीनी जैसे मसाले भारतीय व्यापार की रीढ़ थे। इनके निर्यात से न केवल राज्य को कर और राजस्व प्राप्त होता था, बल्कि विदेशी मुद्रा और बहुमूल्य धातुओं का भी आगमन हुआ। व्यापारिक गतिविधियों के कारण भारत का राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन प्रभावित हुआ और उसने विश्व सभ्यता को भी समृद्ध किया।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में इस विषय का महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि आज भी भारत वस्त्र और मसाला उत्पादन में अग्रणी है। वैश्वीकरण और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझने के लिए प्राचीन भारत का अध्ययन हमें यह सिखाता है कि किस प्रकार स्थानीय संसाधनों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई जा सकती है। यह अध्ययन भारत की उस ऐतिहासिक विरासत को भी उजागर करता है, जिसने इसे “सोने की चिड़िया” और “स्पाइस लैंड” जैसे विशेषण दिलाए।

आगे के अनुसंधान की दिशा में कई संभावनाएँ हैं। शोधकर्ता प्राचीन व्यापार मार्गों की भौगोलिक संरचना का GIS तकनीक से पुनर्निर्माण कर सकते हैं। इसके अलावा, पुरातात्त्विक स्थलों से प्राप्त सिक्कों, लेखों और विदेशी यात्रियों के वृत्तांतों का तुलनात्मक अध्ययन करके और अधिक सटीक आर्थिक आंकड़े निकाले जा सकते हैं। साथ ही, आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार नीतियों को समझने में प्राचीन भारतीय अनुभवों का विश्लेषण उपयोगी साबित हो सकता है। इस प्रकार यह विषय न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की व्यापारिक नीतियों के लिए भी प्रेरणादायक है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, आर. एस. (2005). प्राचीन भारत की अर्थव्यवस्था. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. पृ. 45–60.
2. चंद्र, बी. (2012). भारत का आर्थिक इतिहास. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान. पृ. 112–118.

3. ठाकर, डी. (2018). भारतीय व्यापार और वाणिज्य का इतिहास. वाराणसी: भारती पुस्तक मंदिर. पृ. 90–105.
4. थापर, रोमिला. (2003). प्राचीन भारत. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट. पृ. 133–145.
5. सिंह, उपेन्द्र. (2008). मौर्य और गुप्तकालीन भारत. दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस. पृ. 201–210.
6. प्लिनी, द एल्डर. (अनुवाद 1997). नेचुरल हिस्ट्री (खंड 6). लंदन: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ. 189.
7. पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी (अनुवाद: ससून, जे. एम., 2000). भारतीय महासागर व्यापार पर ग्रीक ग्रंथ. मुंबई: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ. 52–54.
8. मुखर्जी, आर. सी. (2010). *प्राचीन भारत का वाणिज्य और समुद्री व्यापार.* पटना: ज्ञानदीप प्रकाशन. पृ. 55–70.
9. घोष, दीनदयाल. (2015). *भारतीय समुद्री मार्ग और व्यापारिक संपर्क.* कोलकाता: एशियाटिक सोसाइटी. पृ. 102–118.
10. चौधरी, के. एन. (1985). *भारतीय महासागर में व्यापार और सभ्यता.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ. 88–100.
11. मजूमदार, आर. सी. (2002). *प्राचीन भारत का इतिहास और संस्कृति.* मुंबई: भारतीय विद्या भवन. पृ. 167–180.
12. रे, हिमांशु प्रभा. (1994). *द साउथ एशियन ट्रेड एंड पोर्ट्स.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. पृ. 133–147.
13. कौल, एस. (2016). *रेशम मार्ग और भारत.* वाराणसी: भारती प्रकाशन. पृ. 75–85.
14. सिन्हा, ए. (2008). *भारत और रोम के बीच व्यापारिक संबंध.* दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन. पृ. 92–105.